प्रकृति

आनन्दमय जन्मदिवस के उपलक्ष्य में प्रस्तुत
श्रीगुरुमाई के साथ घटित कुछ प्रसंग

श्रीगुरुमाई के साथ प्रसंग : १

लीलावती स्टुअर्ट

हाल ही में, गुरुमाई जी अनुग्रह बिल्डिंग के अमृत कोर्टयार्ड से होकर जा रही थीं। वे कोर्टयार्ड में मौजूद कुछ सेवाकर्ताओं से बात करने के लिए रुकीं। हमने बड़े प्रेम व सम्मान से उनका अभिवादन किया। फिर गुरुमाई जी ने हमें प्रकृति के एक छोटे-से जीव के साथ अभी-अभी हुई अपनी एक बातचीत बताई।

गुरुमाई जी ने कहा कि वे खिड़की के उस भाग से बाहर देख रही थीं जहाँ का काँच धुँधला था। धुँधले काँच वाले भाग पर उन्होंने एक खूबसूरत और चाँदी के रंग के बड़े-से पतंगे को देखा जिसके पंखों पर नाज़ुक-सा डिज़ाइन था। वह पतंगा खिड़की के बाहर की ओर के शीशे पर चढ़ने की कोशिश कर रहा था। वह थोड़ा-सा ऊपर चढ़ता और फिर नीचे फिसल जाता; फिर थोड़ा-सा ऊपर चढ़ता और फिर से फिसल जाता। गुरुमाई जी ने कहा कि वे पतंगे की कशमकश को देख रही थीं। अन्त में उन्होंने पतंगे से कहा, "क्या यही तुम्हारी बेहतरीन कोशिश है?" गुरुमाई जी ने जैसे ही यह कहा, पतंगा उड़ गया!

गुरुमाई जी ने मुस्कराते हुए हमारी ओर देखकर कहा, "पतंगा यह दिखाना चाहता था कि देने के लिए उसके पास और भी बहुत कुछ है!" उन्होंने समझाते हुए कहा कि जब उस पतंगे ने इस चुनौती को सुना—*क्या यही तुम्हारी बेहतरीन कोशिश है?*—तो उसने खुद की क़ाबिलीयत को साबित कर दिखाया; उसकी बेहतरीन कोशिश क्या है, वह उसे याद हो आई और आज़ादी से उड़ने के लिए उसे अपने पंख मिल गए। गुरुमाई जी ने कहा, "पतंगे का यह क़िस्सा एक बहुत ही सुन्दर सिखावनी है। लोग संघर्ष करते रहते हैं और सोचते हैं कि वे बँधे हुए हैं। वे किससे बँधे हैं?" गुरुमाई जी ने मुड़कर आकाश व बग़ीचे की ओर देखा और कहा, "प्रकृति हमेशा ही इतने सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत करती है।"

इसने मेरे मन को छू लिया, साथ ही मैं गुरुमाई जी के प्रति कृतज्ञ थी कि उन्होंने यह घटना अन्य सेवाकर्ताओं को व मुझे बताई। यह इस बात का बहुत ही प्यारा उदाहरण है कि गुरुमाई जी सम्पूर्ण प्रकृति के साथ एकाकार हैं और यह हमें इस बात की याद दिलाता है कि हममें कितनी महानता है।

***

श्रीगुरुमाई के साथ प्रसंग : २

गरिमा बोरवणकर

गुरुमाई जी के जन्मदिवस के अगले दिन, २५ जून, २०१७, रविवार की शाम को कुछ सेवाकर्ता और मैं, गुरुमाई जी के साथ नित्यानन्द झील के आस-पास सैर पर गए थे।

जब हम झील के ऊपर वाले रास्ते पर जा रहे थे, तब कुछ ही देर बाद गुरुमाई जी रुकीं और विपरीत दिशा में पहाड़ी की ओर देखने लगीं। उन्होंने क़रीब दो सौ फ़ीट दूर स्थित एक पेड़ की ओर इशारा करते हुए कहा, "उस छोटे-से पेड़ पर बैठी लाल चिड़िया को देखो।" हम सबने उधर देखा। पेड़ पर बैठी लाल रंग की उस चिड़िया का दृश्य मन्त्रमुग्ध कर देने वाला था। गुरुमाई जी ने मुझसे पूछा कि मैंने वह चिड़िया देखी या नहीं, और मैंने चहकते हुए कहा, "जी गुरुमाई, मैंने देखी ना!" फिर हम आगे चल दिए।

थोड़ी ही देर में, गुरुमाई जी ने ऊपर बादलों में बने एक हृदय के आकार की ओर इशारा किया। हम सब उसे देखने के लिए रुके और देखकर खुश हुए।

हम कुछ और आगे चले, तभी गुरुमाई जी फिर से रुक गईं और रास्ते में सीधे खड़े एक छोटे-से अण्डाकार पत्थर की ओर इशारा किया जिसकी लम्बी-सी छाया ज़मीन पर पड़ रही थी। गुरुमाई जी ने बताया कि उन्हें ऐसे नन्हे-नन्हे पत्थरों की परछाइयाँ देखना बहुत भाता है।

सच में बड़ा आश्चर्य हो रहा था उस छोटे-से पत्थर को देखकर, जो बिलकुल सही सन्तुलन में खड़ा इतनी लम्बी परछाईं दिखा रहा था। मैंने सोचा, *यदि गुरुमाई जी ने इस ओर ध्यान न दिलाया होता तो रास्ते के किनारे पड़े इतने सारे पत्थरों के बीच, इस छोटे-से पत्थर पर मेरा कभी ध्यान ही न जाता। मैं उसके पास से होकर आगे निकल जाती।*

जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते गए, हम सभी का ध्यान बहुत-सी ख़ूबसूरत चीज़ों पर जाने लगा : बादलों के बदलते हुए आकारों से बने और भी हृदय, अनेक ड्रेगनफ़्लाई, आकाश में सूरज की किरणें काले-

घने बादलों के पीछे से सर्वत्र बिखर रही थीं! मैंने ग़ौर किया कि प्रकृति में मौजूद इन मनोहारी आकारों से जुड़कर मुझे कितने हल्केपन व आनन्द का अनुभव हो रहा है।

उसी शाम, बाद में, एक प्रशान्त क्षण में, गुरुमाई जी के साथ सैर के दौरान बिताए हुए उन ख़ूबसूरत पलों को मैं दोबारा जी रही थी। उस समय सिद्धयोग पथ की वेबसाइट की नेचर गैलरी, 'प्रकृति के साथ तादात्म्य स्थापित करें' [Commune with Nature कम्यून विद नेचर], व 'निश्चिन्तता' जैसी गैलरियों में मौजूद अनेक छवियाँ और वीडिओ मेरे मन की आँखों के सामने कौंधने लगे।

गुरुमाई जी के नेत्रों के माध्यम से प्रकृति को निहारकर, मुझे अहसास हुआ कि जब मैं वर्तमान क्षण में रहने हेतु प्रयत्न करती हूँ तो मैं उन चमत्कारों को अधिक से अधिक देख पाती हूँ जिन्हें प्रकृति सतत प्रकट करती रहती है।

© २०१७ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।